(पृष्ठ - 24 का शेष ...)

है। उसके बिना, पाँच अस्तिकायों की वर्तना (परिणमन) नहीं हो सकती।

सिद्धान्तपद्धति से (शास्त्रपरम्परा से) सिद्ध ऐसे जीवराशि, पुद्गलराशि, धर्म, अधर्म, आकाश और काल सभी प्रतीतिगोचर हैं अर्थात् छहों द्रव्यों की प्रतीति हो सकती है।

कालद्रव्य लोकाकाश में है, अलोकाकाश में नहीं; किन्तु जिसप्रकार चाक के घूमने में कीली निमित्त है; उसीप्रकार कालद्रव्य अलोकाकाश के परिणमन में भी निमित्त है। जिसप्रकार घड़ा मिट्टी के कारण हुआ, किन्तु चक्र का निमित्त था, उसी प्रकार कालद्रव्य निमित्त है। यहाँ कालद्रव्य को साबित किया गया है, इसके बिना परिणमन सिद्ध नहीं होता; किन्तु वास्तव में प्रत्येक पदार्थ अपने स्वयं के कारण परिणमन कर रहा है, उसमें काल निमित्त है।

यह अजीव का अधिकार है। भगवान सर्वज्ञदेव ने छह पदार्थ कहे हैं, वे अनादि अनंत हैं और प्रत्येक के गुणपर्याय भी होते हैं ह्न यही कालद्रव्य कहता है।

शास्त्र की परम्परा से छह द्रव्यों की सिद्धि चल रही है। छह द्रव्यों में एक भी द्रव्य कम माने यह शास्त्र परम्परा की बात नहीं। इससे यह सिद्ध हुआ कि छह द्रव्यों की परम्परा जिस शास्त्र में चलती आ रही है, वे ही सच्चे शास्त्र हैं।

इसप्रकार शास्त्र की परम्परा अनादि से चलती आ रही है और जीव-पुद्गल आदि छह की प्रतीति भी होती है।

अब आगामी गाथा में पाँच द्रव्यों के परिणमन में कालद्रव्य निमित्त है ह्न ऐसा आचार्यदेव कहेंगे। छह द्रव्यों की बात दिगम्बर सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं हैं; अतः कुन्दकुन्दाचार्य जो कहते हैं, उससे विरुद्ध कोई माने तो वह आचार्यदेव को नहीं मानता। ●

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
संस्थापित तथा संचालित श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
32 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर
(दिनांक 26 जुलाई से 4 अगस्त, 2009 तक)
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 312 अंक : 12

तजि विषयन की यारी

मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। टेक।।
श्री भगवान चरण पिंजरे बसि तजि विषयन की यारी।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 1 ।।

कुमति कागली सौं मति राचौ ना वह जात तिहारी।
कीजे प्रीत सुमति हंसी सौं बुध हंसन की प्यारी।।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 2 ।।

काहै को सेवत भव झीलर दुख जल पूरित खारी।
निज बल पंख पसारि उड़ो किन हो सरवरचारी।।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 3।।

गुरु के वचन विमल मोती चुग क्यों निज बान बिसारी।
ह्वै है सुखी सीख सुधि राखै भूधर भूले ख्वारी।।
मन हंस हमारी लै शिक्षा हितकारी।। 4।।

ह्न कविवर पण्डित भूधरदासजी

छहढाला प्रवचन

बंध और संवर के बारे में भूल

शुभ अशुभ बंध के फल मंझार, रति-अरति करै निजपद विसार।
आतमहित हेतु विराग-ज्ञान, ते लखैं आपको कष्टदान।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

शुभ-अशुभ से रहित, पुण्य-पाप से रहित, अपने शुद्ध चैतन्यपद का भान-अनुभव तो सम्यग्दृष्टि-गृहस्थ को भी होता है और ऐसे गृहस्थ को भी समन्तभद्र स्वामी ने मोक्षमार्गी कहा है। (गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो...इत्यादि) गृहस्थ को आत्मा में विशेष लीनता नहीं होती; जबकि मुनिवरों को चैतन्यस्वभाव के ज्ञान के उपरान्त विशेष लीनता होती है, वे तो अतीन्द्रिय आनन्द के अनुभव में बहुत लवलीन रहते हैं; उन्हें पंच महाव्रत, नग्नता आदि मूल गुणों के पालन में कष्ट नहीं है, वे तो वीतराग भाव से महान सुखी हैं। चक्रवर्ती राजा से या इन्द्र से भी वे मुनिवर अधिक सुखी हैं; ज्ञान वैराग्य की उग्रता के कारण उन्हें बहुत संवर है और बहुत सुख है; किन्तु बाह्य अनुकूलता को ही सुख माननेवाला अज्ञानी ऐसा मानता है कि मुनि को बहुत कष्ट है, चारित्रदशा में बहुत कष्ट है। अरे, महा आनंदरूप मुनिदशा भी अज्ञानी को दुःखरूप कष्टदायक लगती है; क्योंकि निजघर का आनन्द उसने कभी नहीं देखा, उसने तो शरीर को और राग को ही देखा है; देह से व राग से पार अपना निजपद आनन्दमय है ह्न ऐसे निजपद का निर्धार उसने कभी नहीं किया।

यहाँ 'आतमहित हेतु विरागज्ञान' ऐसा कहा है अर्थात् विराग ज्ञान को हित का हेतु कहा है, राग को आत्मा के हित का हेतु नहीं कहा है। विराग-ज्ञान माने राग के अभावरूप ज्ञान, वही मोक्षमार्ग है, इसमें निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र समा जाते हैं। निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ह्न ये तीनों ही विराग हैं, राग रहित हैं।

आत्मा की स्वरूप में स्थिरता होने पर राग का अभाव हो जाने को भगवान ने वैराग्य कहा है। उसमें तो सिद्ध भगवान समान अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव है, उसमें दुःख या कष्ट का नाम भी नहीं है। जिसमें दुःख या कष्ट लगे, वह तो आर्त्तध्यान है; वह धर्म नहीं है। धर्म में या तप अथवा चारित्र में कष्ट नहीं होता; आनन्द होता है। जिसको दुःख ही दिखता है और आनन्द नहीं दिखता, उसको अपने में धर्म हुआ ही नहीं, वीतराग-विज्ञान उसे प्रगटा ही नहीं। धर्म को जो दुःखरूप या कष्टदायक मानते हैं, उन्हें धर्म की अरुचि है, वे तो राग को सुखरूप-धर्म समझकर रुचिपूर्वक उसी का सेवन करते हैं ह्न ऐसे विपरीत भाव के कारण ही संसार में जीव दुःखी हो रहे हैं।

अरे, वीतरागता में दुःख कैसा? दुःख तो राग में होता है। वीतरागता तो आत्मा का स्वभाव है, उसमें तो परमसुख है। अहा, ज्ञान-वैराग्य के बल से जो अपने निजस्वरूप में स्थिर हुए, उनके अतीन्द्रिय आनन्द का क्या कहना? राग के द्वारा उस आनन्द की कल्पना भी नहीं हो सकती। जैसा सिद्धों का सुख; वैसा ही यह सुख... उसमें खेद कैसा और शोक कैसा? ह्न भले ही शरीर को सिंह-बाघ खा जाते हों ! जिसमें ऐसे आनन्द का अनुभव है, वही संवरतत्त्व है। ऐसे संवर को पहचानकर जीव अपने में प्रगट करे, तब उसका दुःख मिटे और धर्म होवे। ऐसे तत्त्वज्ञान के बिना त्याग-वैराग्य सच्चा नहीं होता। जो रागादि बंधभाव को अच्छा या हितरूप माने, उसको विरागज्ञान नहीं होता और विरागज्ञान (वीतराग-विज्ञान) के बिना आत्मा का हित नहीं होता। अतः हे भव्य ! तुम तत्त्व का यथार्थ स्वरूप पहचानकर वीतराग-विज्ञान प्रगट करो, इससे तुम्हारा कल्याण होगा।

मिथ्यादृष्टि को जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व के विषय में जो भूल है, उसको छुड़ाने के लिये यह उपदेश चल रहा है; जीव-अजीव, आस्रव-बंध व संवर तत्त्व का स्वरूप समझाकर उसमें अज्ञानी की भूल दिखलाई, अब निर्जरा व मोक्ष के सम्बन्ध में अज्ञानी कैसी भूल करता है ? यह कहते हैं ह्न

(छन्द-७)

रोके न चाह निजशक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीति जुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान।।७।।

आत्मा का स्वभाव निराकुल आनन्द से भरा है और इच्छा का उसमें अभाव है; परन्तु अपने ऐसे निजस्वभाव की शक्ति को अज्ञानी खो बैठा है, उसको वह भूल गया है, वह तो इच्छारूप राग को ही अपना स्वरूप मान बैठा है; अतः वह इच्छा का निरोध नहीं करता। इसप्रकार इच्छा के अभावरूप तप, जिसमें आत्मा के आनन्द का अनुभव है और जो निर्जरा का कारण है, उसको अज्ञानी नहीं पहचानता। वह तो ऐसा मानता है कि अनाज न खाने से मुझे तप हो गया और निर्जरा भी हो गई; परन्तु निर्जरा या तप का ऐसा स्वरूप नहीं है। अन्तरंग ध्यान के द्वारा चैतन्य का प्रतपन होना अर्थात् विशेष शुद्धता का होना तप है और संपूर्ण निराकुलता रूप मोक्षतत्त्व है। ह्न ऐसे निर्जरा व मोक्षतत्त्व को न पहचानकर अज्ञानी विपरीत मानता है।

इसप्रकार छन्द २ से ७ में कहे अनुसार सातों ही तत्त्व में अज्ञानी को विपरीत प्रतीति है; ऐसी विपरीत श्रद्धा सहित जो कुछ जानपना (ज्ञान) है, वह सब अज्ञान है और दुःखदायक है ह्न ऐसा जानकर वह छोड़ने योग्य है।

पहली ढाल में चार गति के महादुःखों का जो वर्णन किया, उसका कारण मिथ्याश्रद्धा, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र है; इनमें से तत्त्वों की विपरीत श्रद्धा तथा विपरीत ज्ञानरूप मिथ्याश्रद्धा तथा मिथ्याज्ञान का स्वरूप दिखलाया।

अब आठवें छन्द में मिथ्याचारित्र को पहिचानकर उसे छोडने के लिये मिथ्याचारित्र का स्वरूप कहेंगे।

भाई ! तेरी आत्मा की शक्ति अपार है, इच्छा के द्वारा वह रुकी हुई है। स्वरूप में स्थिरता होने पर इच्छायें रुक जाती हैं और निजशक्ति का विकास होता है ह्न यही निर्जरा है और यही मोक्ष का कारण है। संपूर्ण निराकुलता होनेपर पूर्ण सुखरूप मोक्षदशा प्रगट होती है। 'मैं ज्ञानानंद स्वरूप आत्मा हूँ, पर में मेरा सुख नहीं है, शुभाशुभ इच्छायें मेरा स्वरूप नहीं है' ह्न ऐसी पहचान के बिना शुभाशुभ इच्छाओं का निरोध कभी नहीं होता और आनन्द का अनुभव नहीं होता। इच्छारहित आत्मा का सुखस्वभाव है, उसके अनुभव से ही संवर-निर्जरा-मोक्ष होता है।

अज्ञानी शुभराग से या देह की क्रिया से संवर-निर्जरा-मोक्ष होना मानता है, यह उसकी भूल है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

परमार्थ काल द्रव्य

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 32 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

जीवादु पोग्गलादो णंतगुणा चावि संपदा समया।
लोयायासे संति य परमट्ठो सो हवे कालो।।३२।।

जीव से तथा पुद्गल से भी अनन्तगुने समय हैं; और जो (कालाणु) लोकाकाश में हैं, वह परमार्थ काल है।

यह मुख्य काल के स्वरूप का कथन है।

जीवराशि और पुद्गलराशि से अनंतगुणा समय है। अनंतजीवों का ढेर है। एक आलू के कण में असंख्य औदारिक शरीर और एक औदारिक शरीर में अनंत जीव हैं। वे समस्त जीव स्वभावशक्ति से सिद्धभगवान जैसे हैं। ऐसे अनंतजीवों से पुद्गल अनंतगुणे हैं। जीव की अपेक्षा पुद्गल परमाणु अनंतगुणे है और पुद्गल की अपेक्षा समय अनंतगुणा हैं। जीवराशि से अनंतगुणा समय कहे गए हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि समय (काल) खुल्ले हैं। एक जीव, उसके अनंतगुण और उसके एक गुण की अनन्त पर्यायें है और जितनी पर्यायें हैं, उतने समय हैं; अतः जीव-पुद्गल से अनंतगुणा समय हैं।

भूत-भविष्य के समयों का आँकड़ा पूछें तो समय अनंत हैं। ऐसा जिसने निश्चित किया, उसका लक्ष्य वर्तमान से हटकर त्रिकाली पर जमता है। एक त्रिकाली द्रव्य में से अनंत पर्यायें आती हैं। वहाँ द्रव्य की प्रतीति होने पर द्रव्य में राग नहीं ह्न ऐसा ज्ञान होता है और फिर राग का अभाव अवश्य होता ही है।

प्रत्येक द्रव्य की पर्यायें अनंत हैं और इतने ही समय हैं। जितने समय हैं, इससे भी अधिक आत्मा के अनंतगुणों की अनन्त पर्यायें एक समय में होती हैं। ऐसे अनंत-गुण-पर्यायों का पिण्ड आत्मा है। उसकी प्रतीति करें तो धर्म हो और आत्मा की प्रतीति करे तो सर्वज्ञ की प्रतीति सच्ची कही जाये। समय अनंत हैं, उसकी खबर कालद्रव्य को नहीं है, किन्तु उसे जाननेवाला तो आत्मा है।

कालाणु लोकाकाश के प्रदेश में पृथक्-पृथक् रहते हैं, वह परमार्थ काल है। लोकाकाश के एक-एक प्रदेश पर एक-एक कालाणु हैं। जितने लोक के प्रदेश हैं, उतने कालाणु हैं; वही वास्तव में कालद्रव्य है।

उसीप्रकार श्री प्रवचनसार की १३८वीं गाथा में कहा है कि :ह्न

समओ दु अप्पदेसो पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स।
वदिवददो सो वट्टदि पदेसमागासदव्वस्स।।१३८।।

(हरिगीत)

पुद्गलाणु मंदगति से चले जितने काल में।
रे एक गगनप्रदेश पर परदेश विरहित काल वह।।१३८।।

काल तो अप्रदेशी है। प्रदेशमात्र पुद्गल-परमाणु आकाश द्रव्य के प्रदेश को मन्द गति से लाँघता हो तब वह वर्तता है अर्थात् निमित्तभूतरूप से परिणमित होता है।

छोटे से छोटा पुद्गल परमाणु एक प्रदेश से अन्य प्रदेश तक मंद गति से जाता है, वहाँ काल के एक समय का माप होता है। इस गाथा में समय शब्द से मुख्य कालाणु का स्वरूप कहा है।

और अन्यत्र आचार्य श्री नेमिचन्द्रसिद्धान्तिदेवविरचित बृहद्द्रव्यसंग्रह में २२ वीं गाथा द्वारा कहा है कि ह्न

लोयायासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का।
रयणाणं रासी इव ते कालाणु असंखदव्वाणि।।२२।।

(हरिगीत)

जान लो इस लोक के जो एक-एक प्रदेश पर।
रत्नराशिवत् जड़े वे असंख्य कालाणु दरव।।२२।।

लोकाकाश के एक-एक प्रदेश में जो एक-एक कालाणु रत्नों की राशि की भाँति वास्तव में स्थित हैं, वे कालाणु असंख्य द्रव्य हैं।

मोक्षमार्गप्रकाशक में भी कहा है कि ह्न काल के अभाव में पदार्थों का परिणमन नहीं होता और परिणमन नहीं हो तो द्रव्य भी न हो और पर्याय भी न हो। इसप्रकार सभी के अभाव का प्रसंग आयेगा।

परिणमन में काल निमित्त नहीं है तो कोई कहे नैमित्तिक भी नहीं होगा ह्न यह सिद्ध होगा, किन्तु ऐसा नहीं है। कालद्रव्य को सिद्ध करने की यही रीत है। काल

निमित्त न हो तो द्रव्य का परिणमन ही न हो और परिणमन के बिना कोई वस्तु नहीं होती, इसलिये स्वयं के परिणमन में काल द्रव्य निमित्त नहीं है ह्न ऐसा मानें तो वह जीव वस्तु को नहीं मानता।

और मार्गप्रकाश में भी (श्लोक द्वारा) कहा है कि :ह्न

(अनुष्टुप्)

कालाभावे न भावानां परिणामस्तदंतरात्।
न द्रव्यं नापि पर्याय:सर्वाभाव: प्रसज्यते।।

(दोहा)

सब द्रव्यों में परिणमन काल बिना न होय।
और परिणमन के बिना कोई वस्तु न होय।।४७।।

काल के अभाव में, पदार्थों का परिणमन नहीं होगा; और परिणमन न हो तो द्रव्य भी न होगा तथा पर्याय भी न होगी; इसप्रकार सर्व के अभाव का (शून्य का) प्रसंग आयेगा।

अब ३२ वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज दो श्लोक कहते हैं –

(अनुष्टुप्)

वर्तनाहेतुरेष: स्यात् कुम्भकृच्चक्रमेव तत्।
पंचानामस्तिकायानां नान्यथा वर्तना भवेत्।।४८।।
प्रतीतिगोचरा: सर्वे जीवपुद्गलराशय:।
धर्माधर्मनभ:काला: सिद्धा: सिद्धान्तपद्धते:।।४९।।

(दोहा)

घट बनने में निमित्त है ज्यों कुम्हार का चक्र।
द्रव्यों के परिणमन में त्यों निमित्त यह द्रव्य।।
इसके बिन न कोई भी द्रव्य परिणमित होय।
इसकारण ही सिद्ध रे इसकी सत्ता होय।।४८।।
जिन आगम आधार से धर्माधर्माकाश।
जिय पुद्गल अर काल का होता है आभास।।४९।।

कुम्हार के चक्र की भाँति (अर्थात् जिसप्रकार घड़ा बनने में कुम्हार का चाक निमित्त है; उसीप्रकार), यह परमार्थकाल (पाँच अस्तिकायों की) वर्तना का निमित्त

(शेष पृष्ठ – 4 पर...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : मात्र द्रव्यानुयोग का अभ्यास करने से क्या निश्चयाभासी हो जाते हैं ?

उत्तर : नहीं, द्रव्यानुयोग के अभ्यास से निश्चयाभासी नहीं होते; पर व्यवहार है ही नहीं, ऐसा निषेध करने से निश्चयाभासी होते हैं। इसीलिए कहा है कि जिसे निश्चय का अतिरेक हो, उसे व्यवहार ग्रहण करना चाहिये और जिसे व्यवहार का अतिरेक हो, उसे निश्चय ग्रहण करना चाहिए।

प्रश्न : जो मुनि आहारक शरीर प्रकृति बाँधे, उसके वह उदय में आवे ही आवे ह्न ऐसा कोई नियम है ?

उत्तर : नहीं, कोई आहारक शरीर नामकर्म बाँधे; परन्तु उसके उदय का अर्थात् आहारक शरीर की रचना का प्रसंग कभी भी न आवे, बीच में ही उस प्रकृति का छेद करके मोक्ष प्राप्त कर ले; परन्तु तीर्थंकर नामकर्म में ऐसा नहीं बनता, वह तो जिसके बँधता है, उसके नियम से उदय होता है। आहारक शरीर की प्रकृति सातवें या आठवें गुणस्थान में बँधती है; किन्तु उदय छठे गुणस्थान में होता है। कोई जीव क्षपक श्रेणी माँडते समय आहारक शरीर प्रकृति बाँधे और सीधा केवलज्ञान प्राप्त कर ले तो उसके छठे गुणस्थान में वापस गिरने का और आहारक शरीर की रचना का प्रसंग ही नहीं बनेगा। छठे गुणस्थान में आहारक शरीर की रचनावाले मुनिवर एक साथ अधिक से अधिक 54 ही होते हैं ।

प्रश्न : ग्यारह अंगधारी द्रव्यलिगीं मुनि की क्या भूल रह जाती है ?

उत्तर : वह स्वसन्मुख दृष्टि नहीं करता, अतीन्द्रिय प्रभु के सन्मुख दृष्टि नहीं करता।

प्रश्न : क्या द्रव्यलिंगी मुनि स्वसन्मुखता का प्रयत्न करता ही नहीं?

उत्तर : नहीं, उसके धारणा में सब बातें आती हैं; किन्तु अन्तर्मुख प्रयत्न नहीं हो पाता।

प्रश्न : द्रव्यलिंगी की भूमिका की अपेक्षा सम्यक्त्वसन्मुख की भूमिका कुछ ठीक है क्या ?

उत्तर : हाँ, द्रव्यलिंगी तो सन्तोषित हो गया और सम्यक्त्वसन्मुखता वाला तो प्रयत्न करता है।

43 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

कोलारस (म.प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में संचालित शिविरों की श्रृंखला में 43 वाँ श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन कोलारस मुमुक्षु मण्डल, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा कोलारस एवं श्री आदिनाथ जिनालय समिति कोलारस द्वारा बृहद्स्तर पर किया गया।

प्रथम दिन श्री राकेशकुमारजी विवेककुमारजी जैन सर्राफ (कोलारसवाले) कोटा के करकमलों से ध्वजारोहण हुआ। मंगल कलश स्थापना श्री पारसकुमारजी जैन परिवार कोलारस ने की, शिविर का उद्घाटन श्री आनंदकुमारजी चौधरी (कोलारसवाले) मुंगावली ने किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने मंगल उद्बोधन में श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर क्या, क्यों और कैसे ?का सरल एवं सुबोध शैली में खुलासा किया।

आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता ने की । विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रविंद्र शिवहरे - अध्यक्ष नगर पंचायत कोलारस, श्री जितेन्द्रकुमार जैन पत्तेवाले, श्री गोपाल अग्रवाल, पण्डित श्यामलालजी ग्वालियर, पण्डित अभयकुमारजी बदरवास के साथ-साथ सभी विशिष्ट विद्वत्गण मंचासीन थे।

सभा का संचालन सेठ सुकमालजी जैन कोलारस एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया। स्वागत भाषण पण्डित गिरनारीलालजी ने तथा आभार प्रदर्शन पण्डित किशनमलजी जैन ने किया।

प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं सायंकाल तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 'भगवान महावीर का जीवन एवं उनके सिद्धान्त' विषय पर हुये मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त दोनों समय बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के निमित्तोपादान एवं समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्दति की कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा ने ली। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्दति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडा ने ली ।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा छहढाला एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा ली गई। प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा के माध्यम से पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा का लाभ मिला।

शिशुवर्ग की कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सुदीपजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित अंकितजी छिन्दवाड़ा एवं पण्डित पंकजजी बकस्वाहा द्वारा किया गया।

इसके अलावा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, पण्डित नरेन्द्रजी

जैन जबलपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती रंजना बंसल अमलाई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री कोलारस, पण्डित शीतलजी नौगांव, इंजि. संजयजी जैन खनियांधाना, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित विजयजी बोरालकर कोटा, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री धर्मेन्द्रकुमार संजीवकुमार प्रवीणकुमारजी चौधरी परिवार कोलारस, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचन्दजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय व ध्याता बजाज कोटा तथा श्री राजमल जैन एवं देवेन्द्रकुमार ऋषभकुमार महेन्द्र नीरज निपुण जैन परिवार कोलारस थे।

विधान के आयोजनकर्त्ता श्री महेशकुमार पारसकुमार प्रयांशु जैन (मोरीवाले) कोलारस थे।

शिविर के माध्यम से बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण के माध्यम से लगभग 215 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर में बाहर गाँव से पधारे लगभग 750 साधर्मियों के अतिरिक्त सैंकड़ों स्थानीय साधर्मी भाई-बहिनों ने भरपूर लाभ लिया। शिविर में लगभग 53 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 3500 घण्टों के प्रवचन घर-घर पहुँचे। ●

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ७५वें जन्म दिवस पर
धूमधाम से शुरू हुआ हीरक जयन्ती वर्ष

कोलारस : यहाँ चल रहे 43वें आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान फैडरेशन ने 23 मई को आयोजित अपने 31वें अधिवेशन में डॉ. भारिल्ल के 75वें जन्म दिवस को 25 मई 09 से 25 मई 2010 तक **डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष** के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

25 मई को डॉ. भारिल्ल का 75वाँ जन्मदिवस है। यह जानकर सभी शिविरार्थियों में हर्ष की लहर दौड़ गई। फैडरेशन कोलारस एवं सभी शिविरार्थियों ने इसे अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाने की योजना बनाई।

इसके अंतर्गत 25 मई को डॉ. भारिल्ल जैसे ही देवदर्शन करके जिनालय से बाहर आये, सभी ने उन्हें जन्म-दिवस की बधाइयाँ दीं और ससम्मान कार्यक्रम स्थल तक लेकर गये। इस अवसर पर आयोजित सभा में डॉ. भारिल्ल के अभिनंदन के उपरांत उनके बहुमुखी व्यक्तित्व व कर्तृत्व को स्मरण करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के कार्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए दीर्घजीवी होने की कामना की गई।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि ''यह सम्मान मेरा सम्मान नहीं, जिनवाणी का सम्मान है।'' पूज्य गुरुदेवश्री को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि ''मैंने उनके जीवन से बहुत सीखा है एवं उनकी चिता के समक्ष बाबूभाई और मैंने गुरुदेवश्री के बताये हुए वीतरागी तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया था। बाबूभाई तो मुझे छोड़कर चले गये। लेकिन अभी मैं बैठा हुआ हूँ और आजीवन यह कार्य करता रहूँगा।'' डॉ. भारिल्ल के वक्तव्य को सुनकर सारी सभा भावविभोर हो गई। कार्यक्रम का संयोजन फैडरेशन शाखा कोलारस ने किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

31 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

कोलारस (म.प्र.): यहाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 23 मई, 09 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 31 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन श्री ऋषभचन्दजी जैन डबरा ने किया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभा की अध्यक्षता पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री संदीपकुमारजी कोटा मंचासीन थे। परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री के अतिरिक्त शिविर आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री गिरनारीलालजी, मंत्री श्री किशनमलजी, संयोजक श्री देवेन्द्रजी, निर्देशक श्री संजीवजी चौधरी एवं फैडरेशन शाखा कोलारस के अध्यक्ष श्री हेमेन्द्र जैन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संस्था की उपलब्धी एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुये बालकों एवं नवयुवकों को फैडरेशन में शामिल होने का आव्हान किया।

राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने अपने प्रदेश की गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 75 वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर उनकी हीरक जयन्ती वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फैडरेशन के द्वारा मनाया जाने का प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन श्री प्रमोदकुमारजी मोदी, मकरोनिया सागर ने एवं सम्पूर्ण सभा ने करतल ध्वनि द्वारा अनुमोदन किया।

यह तो सर्व विदित है कि पूज्य गुरुदेवश्री की हीरक जयंती के अवसर पर तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करके सम्मानित किया था तथा आदरणीय युगलजी साहब की हीरक जयंती का आयोजन श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुंबई ने सभी संस्थाओं के सहयोग से किया था, उसी शृंखला में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती समारोह का आयोजन देश-विदेश की सभी प्रमुख संस्थाओं के सहयोग से फैडरेशन द्वारा किया जा रहा है।

परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के उद्बोधन का लाभ भी सभा को मिला। संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने वर्ष भर में श्रेष्ठ कार्य करनेवाली शाखाओं एवं कार्यकर्त्ताओं के नामों की घोषणा की।

अध्यक्षीय भाषण में श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि आत्मानुभूति एवं तत्त्वप्रचार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह युवा फैडरेशन कार्य कर रहा है एवं इसमें किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत राग-द्वेष को कोई स्थान नहीं है।

फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' के गायन के साथ अधिवेशन का समापन हुआ। सभा का संचालन पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती वर्ष प्रारम्भ ह्न

शिष्यों ने दी अपने गुरु को अनूठी गुरु दक्षिणा

कोलारस : प्रशिक्षण शिविर के दौरान आया 25 मई 09 का दिन इतिहास में सदा के लिए अपनी छाप छोड़ गया। डॉ. भारिल्ल के 75वें जन्म-दिवस के अवसर पर प्रात:काल फैडरेशन शाखा कोलारस, मुमुक्षु मण्डल एवं शिविरार्थियों द्वारा उनका हीरक जयन्ती दिवस अपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने जब गुरुदेव की चिता के समक्ष की गयी आजीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की प्रतिज्ञा को स्मरण किया तो वहाँ उपस्थित सभा समुदाय के साथ-साथ उनका शिष्य समुदाय भी भावुक हो उठा।

उनके शिष्यों ने इस अवसर को और भी स्मरणीय और अनूठे ढंग से मनाने के लिए एक कार्ययोजना तैयार की। सायंकाल डॉ. भारिल्ल जैसे ही प्रवचन हेतु सभा मण्डप में उपस्थित हुए, उनके सभी शिष्यों ने सभा मण्डप के दोनों ओर खड़े होकर करतलध्वनि से स्वागत किया और बड़े दादा के साथ उनको विशेषरूप से तैयार मंच तक ले गये।

तदुपरान्त वरिष्ठ शिष्यों ने दोनों दादाओं का बड़े-बड़े हार गुच्छों (कृत्रिम) एवं कलम भेंट करके स्वागत किया। इसके पश्चात् वहाँ उपस्थित भूतपूर्व एवं वर्तमान 97 स्नातक शिष्य जो सभी धवल कुर्ते-पजामे में थे,ने मंच पर खड़े होकर अपने गुरु के समक्ष उनके ही समान वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का निम्न संकल्प व्यक्त करके उन्हें अनोखी गुरु दक्षिणा समर्पित की।

''हम अपने गुरु डॉ हुकमचन्दजी भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके समक्ष देव-शास्त्र-गुरु की साक्षीपूर्वक भगवान महावीर आदि तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट कुन्दकुन्दादि आचार्यों, टोडरमलजी आदि विद्वानों एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रदर्शित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का आजीवन संकल्प लेते हैं।''

शिष्य समुदाय की भावनाओं को देखकर भावविभोर होकर बड़े दादा ने विद्यार्थियों को अपने जीवन की अमूल्य निधि बतलाते हुए सभी को स्व-पर कल्याण में संलग्न रहने का आशीर्वाद दिया।

छोटे दादा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमने सुना था कि यदि कोई कार्य पवित्र भावना से किया जाय तो वह शतगुणा होकर फलता है और आज यहाँ यह 97वें गुणा फलित होता देख मैं अभिभूत हूँ और 97वें ही क्यों अभी तो 535 स्नातक महाविद्यालय से निकले हैं और सभी की ऐसी ही भावना है चाहे वें यहाँ उपस्थित हों या नहीं, परन्तु जब उन्हें यह सूचना मिलेगी तो वे भी ऐसा ही संकल्प करेंगे, अत: यह 535 गुणा फला है और अभी यह कार्य निरंतर प्रारम्भ है, इसलिए यह सहस्त्रगुणा फलेगा ऐसा मैं मानता हूँ। और तत्त्वज्ञान की धारा अविरलरूप से प्रवाहित होती रहेगी ह्न इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरे इन छात्रों ने आज ये संकल्प व्यक्त किया है ह्न यह मेरे लिए सबसे बड़ी गुरु दक्षिणा है। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

नोट ह्न डॉ. भारिल्ल के जिन छात्रों ने यह संकल्प लिया, उनकी सूची हम स्थान की सुविधानुसार जैनपथप्रदर्शक में छापेंगे और भी जो स्नातक छात्र हमें अपनी स्वीकृति फोन या पत्र द्वारा देवेंगे, उनके नाम भी इस सूची के अंतर्गत प्रकाशित किये जायेंगे। **ह्न प्रबंध सम्पादक**

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का ह्न

द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

कोलारस (म.प्र.): यहाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 24 मई, 09 को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री कुलदीपजी जैन सिविल जज सीहोर एवं विशिष्ट अतिथि इंजिनियर संजयकुमारजी खनियांधाना थे। इसके अलावा कार्याध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, कोषाध्यक्ष धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं कार्यकारिणी सदस्य डॉ. नरेन्द्र जैन, रतनचंदजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, प्रवीणजी शास्त्री, अनेकांतजी भारिल्ल आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल भी मंचासीन थे। मंगलाचरण अंकितजी शास्त्री लूणदा ने किया।

स्नातक परिषद् के कार्याध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने सभा की शुरूवात करते हुये कहा कि यह संगठन महाविद्यालय के नये और पुराने स्नातकों का नया संगठन है। इसका परम मूल उद्देश्य स्वयं मोक्षमार्ग में लगना और दूसरों को मोक्षमार्ग में लगाना तथा इसी के साथ गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना है।

डॉ. भारिल्ल ने इस अवसर पर स्नातक परिषद् को अपना आशीर्वाद देते हुये कहा कि जिसप्रकार कच्ची नहर पहले स्वयं पानी से तृप्त होती है, फिर पानी को आगे जाने देती है, उसीप्रकार सभी स्नातकों को कच्ची नहर के समान तत्त्वज्ञान को आकंठ पी लेना चाहिये और जब वह छलकने लगे तब उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये।

धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने महाविद्यालय के स्नातकों का संक्षिप्त व्यौरा एवं उनकी प्रगति की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाडा, संजयजी शास्त्री खनियांधाना, विकासजी शास्त्री बानपुर, जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, अध्यात्मप्रकाशजी कोलारस, विनीतजी शास्त्री ग्वालियर ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने कहा कि स्नातक परिषद इस वर्ष दो महत्वपूर्ण कार्य हाथ में ले रही है। एक कार्य तत्त्वप्रचार से संबंधित है और दूसरा आत्मकल्याण से। इस क्रम में स्नातक परिषद द्वारा 'आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी का दि. जैन धर्म के उत्थान में योगदान' विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा तथा परिषद के सदस्य स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जुडे रहें इसके लिये इस वर्ष प्रवचनसार परमागम का स्वाध्याय और वाचना का कार्य किया जावे। इसकी विस्तृत जानकारी यथा समय सभी को दी जायेगी।

इस अवसर पर क्या मृत्यु अभिशाप है, अंतर्द्वन्द पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल तथा मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार पुस्तक श्रीमती शशि प्रकाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर की ओर से उपस्थित सभी स्नातको को भेंट की गई।

सभा का संचालन परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

ग्रीष्मावकाश में शिक्षण शिविरों की धूम

मई एवं जून माह में पूरे देश में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। भिण्ड (म.प्र.), बुन्देलखण्ड, अलवर (राज.), नागपुर और हिंगोली (महा.) में ग्रुप शिविर लगाये गये। लगभग 200 स्थानों पर लगे इन शिविरों में 225 विद्वानों के माध्यम से लगभग 35-40 हजार बाल-बालिकाओं ने जैनत्व के संस्कार अर्जित किये। साथ ही हजारों साधर्मियों ने ज्ञान गंगा में स्नान किया। ग्रुप शिविरों के अतिरिक्त सिद्धायतन (द्रोणगिरि), इन्दौर, उदयपुर, पिड़ावा, मलकापुर, भोपाल, जयपुर, औरंगाबाद, बिजौलिया आदि स्थानों पर स्थानीय स्तर पर भी बृहद् शिविरों का आयोजन किया गया। कुछ स्थानों के संक्षिप्त समाचार यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। कुछ आगामी अंक में प्रकाशित होंगे।

1. अलवर (राज.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-अलवर द्वारा अलवर, भरतपुर, दौसा, टोंक आदि जिलों के लगभग 25 स्थानों पर आयोजित 'जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर-2009' अभूतपूर्व सफलता के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर का शुभारंभ दिनांक 22 मई, 2009 को श्री सम्मेद शिखर मण्डल विधान के माध्यम से हुआ। ध्वजारोहण श्री अशोककुमारजी ठेकेदार अलवर ने किया। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम के प्रवचन का लाभ मिला।

शिविर अलवर के स्थानीय 9 मंदिरों के अलावा, बडौदामेव, खेरली, लक्ष्मणगढ, मण्डावर, सिकन्दरा, दौसा, लवाण, राजगढ, गोविंदगढ, रामगढ, देवली, मण्डाना, थानागाजी, जुरहैरा आदि स्थानों पर संचालित किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर तथा अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा से पधारे लगभग 30 विद्वानों द्वारा प्रात: से सायं तक ज्ञान गंगा प्रवाहित की गई। शिविर संयोजक श्री शशिभूषण जैन के साथ पं. राजकुमारजी शास्त्री एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा ने शिविर के विभिन्न स्थानों का निरीक्षण किया।

दिनांक 29 मई को शिविर का समापन समारोह जैन वाटिका के विशाल सभागार में रखा गया, जहाँ लगभग 700 साधर्मियों एवं बालकों की उपस्थिति रही। समारोह में फैडरेशन के केन्द्रीय संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, राज. प्रदेशप्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, स्वतंत्रता सेनानी श्री महावीरप्रसादजी जैन, अलवर शहर के विधायक श्री बनवारीलाल सिंघल एवं पण्डित किशनचन्दजी भाई सा. की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभी स्थानों से आये शिविरार्थियों को योग्यतानुसार पुरस्कार वितरित किये गये। शिविर में लगभग 1300 शिविरार्थियों ने धर्म लाभ लिया।

शिविर का आयोजन श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, दि. जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा एवं श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर के विशेष आर्थिक सहयोग से किया गया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

2. बुन्देलखण्ड (म.प्र.) : यहाँ सागर, छतरपुर एवं दमोह जिलों के लगभग 18 स्थानों पर मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के आयोजकत्व में बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर ब्र. यशपालजी, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री के निर्देशन में तथा के.के.पी.पी.एस उज्जैन एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई के विशेष सहयोग से सम्पन्न हुआ।

शिविर में श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के विद्वान सर्वश्री पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, सुधीरजी अमरमऊ, राहुलजी दमोह, जयदीपजी डडूका, दीपकजी खनियांधाना, निशंकजी टीकमगढ, विवेकजी मडदेवरा, दीपकजी मडदेवरा, सुदीपजी अमरमऊ, सौरभजी अमरमऊ, आकाशजी खनियांधाना, भावेशजी उदयपुर, जयेशजी उदयपुर, अनेकांतजी दलपतपुर, शनिजी खनियांधाना, राहुलजी भौगाँव, मोहितजी नौगाँव, अर्पितजी उदयपुर आदि विद्वानों के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला।

लगभग सभी स्थानों पर बच्चों को मनोवैज्ञानिक पद्धति से पूजन प्रशिक्षण के साथ-साथ धार्मिक संस्कार दिये गये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। इस ग्रुप शिविर में लगभग 1200 बच्चों ने उत्साह से भाग लिया।

शिविर संयोजक पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मडदेवरा, पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ तथा पण्डित सौरभजी शास्त्री खड़ैरी थे।

3. नागपुर (महा.) : यहाँ दिनांक 31 मई से 7 जून 09 तक श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर के तत्त्वावधान में श्री नरेशकुमारजी सिंघई एवं श्री सुदीपकुमारजी जैन परिवार द्वारा आयोजित 12 वॉ संस्कार शिक्षण-शिविर, ग्रुप शिविर एवं श्री महावीर विद्या निकेतन का प्रवेश पात्रता शिविर आयोजित किया गया।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष समाजसेवी श्री रामरतन सारडा थे और विशिष्ट अतिथि श्री कृष्णा खोपडे (भूत.अध्यक्ष स्थायी समिति), श्री चंदु मेहर (भूत.नगरसेवक), श्रीमती एन.चंद्रिकापूरे (मुख्याध्यापिका), श्री एन. के. पलसापुरे (आर्किटैक्ट), श्री नंदकिशोर मांगुलकर काटोल, श्री आलोक शास्त्री कारंजा आदि मंचासीन थे। सभा में विद्या निकेतन के प्राचार्य पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी ने विद्या निकेतन संबंधी विस्तृत जानकारी और प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस शिविर की विशेष उपलब्धी यह रही कि विदर्भ के 25 स्थानों पर 40 युवा विद्वानों के सान्निध्य में कुल 1536 बालक एवं 1296 श्रावकों ने अनेक विषयों की परीक्षा देकर प्रमाणपत्र प्राप्त किया। पाळा एवं पांढुर्णा में युवा फैडरेशन शाखा का गठन किया गया। दशलक्षण हेतु यवतमाळ, आर्वी, काटोल, बोरगांव मंजू से आमंत्रण प्राप्त हुये।

ग्रुप शिविर का समापन समारोह नवनिर्मित वीतराग-विज्ञान भवन में संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी जैन ने की। मुख्य अतिथि अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन करेली, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन करेली, श्री रजनीशजी जैन, पुरस्कार वितरणकर्त्ता श्री नरेशकुमारजी सिंघई एवं समस्त विद्वत्गण मंचासीन थे। शिविरका संयोजन पण्डित प्रवेशजी शास्त्री एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री ने किया।

ह्न अशोक जैन

अनेक स्थानों पर बाल संस्कार शिविरों की धूम

1. खण्डवा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 6 से 13 जून, 2009 तक अष्टम बाल संस्कार शिविर एवं इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ।

शिविर में पण्डित देवेन्द्रजी सिंगोडी तथा पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड मुख्य प्रवचनकार के रूप में उपस्थित थे। आपके अतिरिक्त श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा, पण्डित संदीपजी शहपुरा, पण्डित अभिषेकजी मडदेवरा आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

2. पिड़ावा (राज.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 28 मई से 5 जून तक श्री कल्पद्रुम मण्डल विधान एवं बाल संस्कार शिविर हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस मंगलमय कार्यक्रम में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रतिदिन तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

बाल संस्कार शिविर का आयोजन श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल नैरोबी (अफ्रिका) के विशेष सहयोग से किया गया, जिसमें 256 बालक-बालिकाओं ने धार्मिक संस्कार प्राप्त किये।

विधान के सम्पूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान मनीषजी शास्त्री, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री एवं श्री राकेशजी जैन ने सम्पन्न कराये। सम्पूर्ण कार्यक्रमों का निर्देशन पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' ने किया।

3. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधना नगर में दिनांक 16 से 23 मई तक श्री दिग. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रात: 6.30 से दोपहर 1 बजे तक चलनेवाले इस शिविर में लगभग 1000 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया।

विद्वानों में श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित निलयजी शास्त्री सरदार शहर, पण्डित अमोलजी शास्त्री हिंगोली आदि 25 विद्वानों ने धर्मगंगा प्रवाहित की। कार्यक्रम के प्रमुख संयोजक पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल थे।

समापन समारोह के अतिथियों में श्री प्रकाशजी लुहाड़िया, श्री एम.के. जैन, श्री आर. के. मैना जैन, श्री प्रमोदजी जैन आदि ने अपने मार्मिक उद्बोधनों से सभा को संबोधित किया।

इस अवसर पर श्री मनोहरलालजी काला एवं श्री पदमजी पहाड़िया ने ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय दिया। अंत में श्री विजयजी बड़जात्या ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

4. द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 28 मई से 4 जून तक श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट की ओर से द्वितीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित निलयजी शास्त्री सरदारशहर, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित विश्वासजी शास्त्री, श्रीमती स्वस्ती जैन आदि विद्वानों का सान्निध्य एवं लाभ मिला।

शिविर के संयोजक पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ एवं सह-संयोजक पण्डित विशेषजी शास्त्री व पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री थे। कार्यक्रम प्रभारी श्री मुन्नालालजी एवं श्री प्रमोदजी मस्ताईं थे।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2009

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 18 जुलाई 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 19 जुलाई 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 20 जुलाई 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**